IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.301
Volume 3, Issue 1, December 2023

पर्यावरण संरक्षण में आदिवासियों की भूमिका (सीधी जिले के विशेष संदर्भ में)

Preeti Satyanami[1] and Dr. Madhulika Shrivastav[2]
Research Scholar, Department of Sociology[1]
Professor, Department of Sociology[2]
Government Thakur Ranmat Singh College, Rewa, Madhya Pradesh, India

सारांश :-

पर्यावरण एवं समाज एक दूसरे से संबंधित हैं।वास्तव में पर्यावरण तथा समाज परस्पर संबंधित(एक दूसरे पर निर्भर) है।जनजाति समुदाय दुनिया भर में पारिस्थितिक तंत्र के रखरखाव में अपरिहार्य ताकत रहे है. भारतीय जनजातियों ने खेती, मछली पकड़ने और वन्यजीवों के साथ रहने की जगहों में स्थाई प्रतिमा प्राकृतिक आवासों को संरक्षित करने और संरक्षण को बढ़ावा देने में मदद की है। आदिवासी लोग और जैव विविधता एक दूसरे के पूरक हैं लोग जंगल से उतना ही लेते हैं इतनी उन्हें जरूरत होती है जबकि जनजाति लोग जंगल के बीच रहते हैं जो जंगल में नंगे पैर चलते हैं तथा यह उनका प्रकृति के प्रति सम्मान प्रदर्शित करने का तरीका है।

मुख्य शब्द :- पर्यावरण, आदिवासी, सरंक्षण एवं भूमिका।

प्रस्तावना:- हमारे आसपास पाए जाने वाले सभी पदार्थ जीव - जंतु नदी, तालाब खेत पेड़ पौधा हवा इत्यादि के समूह को पर्यावरण कहते हैं। पर्यावरण शब्द “परि” एवं “आवरण” शब्दों की संधि से बना है जहाँ परि का अर्थ होता है चारो तरफ तथा आवरण का अर्थ होता है घेरा। इस प्रकार पर्यावरण का अर्थ होता है चारों तरफ से घेरना अर्थात मनुष्य के चारों ओर का वह क्षेत्र जो उसे घेरे रहता है एवं हमारे चारों ओर को प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करता है पर्यावरण कहलाता है।

प्राकृतिक पर्यावरण

प्राकृतिक पर्यावरण में वे प्राकृतिक शक्तियां व वस्तुए आती है जिनका का निर्माण प्रकृति ने किया है. जैसे - हवा, पानी, जमीन, मिट्टी, पहाड़ व अन्य।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.301
Volume 3, Issue 1, December 2023

सामाजिक पर्यावरण

सामाजिक पर्यावरण के अंतर्गत मानवीय संबंधों से निर्मित समूह संगठन समाज समुदाय, समिति व संस्था आदि आते हैं।

सांस्कृतिक पर्यावरण

इसमें सांस्कृतिक द्वारा प्रदत धर्म नैतिकता हाय लोकाशा कानून व्यवहार , प्रतिमान आदि को सम्मिलित किया जाता है, जिसके अनुरूप मनुष्य अपने को ढालने का प्रयास करता है। हमारे जीवन का सबसे प्यारा सहारा पर्यावरण है इसे बचाने के लिए हमें ज्यादा से ज्यादा पेड़ लगाने होंगे. उद्योगों से निकलने वाले दूषित पदार्थ का सही तरह से निस्तारण करना होगा। पर्यावरण की साफ़ सफाई का ध्यान देना पड़ेगा. प्राकृतिक संसाधनों का विवेकपूर्ण उपयोग करना होगा।

आदिवासी लोग अपने पर्यावरण अनुकूल संस्कृति से प्यार करते हैं और अपनी संस्कृति की रक्षा करना चाहते हैं। आदिवासियों की वजह से आज अधिकतर जंगलों को कटाई से रोका गया है जंगलों के संरक्षण में अपनी महान भूमिका निभा रहे हैं।आदिवासी सदियों से जंगल में रहे है और इन्हे जंगलों से एक अलग तरह का लगाव हो गया है। भारत एक विशाल आदिवासी समाज वाला देश है और इसके पास अपर सम्पदा है, जिसके कारण यह जैव विविधता से समृद्ध है। आदिवासी वन उपज, वन इमारती लकड़ी और ईंधन लकड़ी का उपयोग करते है।

वन अधिकार अधिनियम 2006

अनुसूचित जनजातियों और अन्य पारंपरिक वणनाशियों की भूमि के कार्यकाल आजीविका के साधन और खाद्य सुरक्षा की गारंटी देना है।संविधा के अनुच्छेद 253 के तहत पर्यावरण संरक्षण अधिनियम भारत के संसद द्वारा 1986 में पारित किया गया था यह अधिनियम 19 नवम्बर 1986 को लागू हुआ था। पर्यावरण संरक्षण अधिनियम संसद द्वारा 23 मई 1986 को पारित किया गया था और 19 नवम्बर 1986 को लागू हुआ था। इसे पारित करने का मुख्य उद्येश्य संयुक्त राष्ट्र द्वारा पर्यावरण संरक्षण की दिशा में किये गए प्रयासों को भरत में विधि (कानून) बनाकर लागू करना है। मनुष्य तथा पर्यावरण के बीच सम्बन्धों का अध्ययन किसी न किसी रूप में भूगोल में सर्वदा केन्द्रीयविषय रहा है परन्तु पर्यावरण विज्ञान के है रूप में भूगोल की संकल्पना तथा मान-पर्यावरण सम्बन्ध केविभिन्न पक्षों में मानव समाज तथा पर्यावरण के आयाम में विकास के साथ परिवर्त न होतारहा है। मनुष्य एवं उसके समाज के उद्भव एवं विकास की प्रक्रिया को प्रारम्भिक चरण में इस ग्रहीय पृथ्वीभौतिक तत्वों (यथा-स्थल, मृदा, जल, वायु, वनस्पति तथा जन्तु) से मनुष्य के पर्यावरण की रचना होती थीतथा मनुष्य मूलरूप में

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.301
Volume 3, Issue 1, December 2023

भौतिक गानय था क्योंकि उसकी आवश्यकतायें (जल, वायु भोजनतथा निवास्य क्षेत्र) सीमित थी तथा वह पूर्णरूपेण 'प्रकृति पर निर्भर होता था। जैसे - जैसे मनुष्य सामाजिक,आर्थिक तथा प्रौद्योगिकी मानव होता गया, बेहतर भोजन, शरण (निवास क्षेत्र), गश्त एवं बुद्धि कौशल के द्वारा अपना निजी पर्यावरण बनाता गया और इस तरह मनुष्य केपर्यावरण का दायरा बढ़ता गया। अब वह मात्र प्रकृति तथा पर्यावरण पर पूर्णतया आश्रित नहीं रहा परन्तु उसने अपना पर्यावरण पर पूर्णतयया आश्रित नहीं रहा वरन उसने अपना पर्यावरण भी बना लिया तथापर्यावरण तथा प्रकृति को प्रभावित करना प्रारम्भ कर दिया। इस तरह मानव पर्यावरण के बीच सम्बन्धों मेंक्रमानुगत परिवर्त न होता रहा है।

ऐतिहासिक परिवेश

मनुष्य की प्राकृतिक पर्यावरण के साथ दो तरफा भूमिा होती है। अर्थात मनुष्य एक तरफ तोभौतिक पर्यावरण के जैविक संघटन का एक महत्वपूर्ण भाग तथा घटक है तो दूसरी तरफ वह पर्यावरण काएक महत्वपूर्ण कारक भी है। इस तरह मनुष्य प्राकृतिक पर्यावरण तंत्र को विभिन्न हैसियत से विभिन्न रूपोंमें प्रभावित करता है यथा 'जीविय या भौतिक मनुष्य के रूप में (अर्थात पर्यावरण के एक घटक के रूप में)'सामाजिक मनुष्य के रूप में, आर्थिक मनुष्य के रूप में तथा 'प्रौद्योगिक मानव के रूप में मनुष्य के सभीप्राकृतिक गुण यथा जन्म वृद्धि, स्वास्थ्य, मृत्यु आदि प्राकृतिक पर्यावरण के अन्य जीवों के प्राकृतिक गुणप्रभावित तथा नियंत्रित होते हैं परन्तु चूँकि मानव अन्य प्राणियों की तुलना में शारीरिक एवं मानसिक स्तरोंअतः प्रौद्योगिक स्तर पर भी सर्वाधिक विकसित प्राणी है अतः यह प्राकृतिक पर्यावरण को बड़े स्तर परपरिवर्तित करके अपने अनुकूल बनाने में समर्थ भी है। प्रारम्भ में आदिमानव की भौतिक पर्यावरण कीकार्यात्मकता में भूमिका दो तरह की होती थी पाता तथा दाता की। अर्थात् मनुष्य भौतिक पर्यावरण से अन्यजीवों के समान संसाधन (फल-फूल, पशु-मांश आदि) प्राप्त करता था। (पाता की भूमिका) तथा पर्यावरणीयसंसाधनों में अपना योगदान भी करता था (दाता- देनेवाला की भूमिका, फलों के बीजों को अनजाने मेंविखेर कर)। इस तरह मानव संस्कृति के विकासके प्रथम चरण में मनुष्य भौतिक पर्यावरण का अन्यकारकों के समान एक कारक मात्र था।

मनुष्य तथा पर्यावरण के मध्य बदलते सम्बन्धों के ऐतिहासिक परिवेश में अध्ययन का अत्यधिकमहत्व होता है क्योंकि इस तरह के अध्ययन द्वारा मानव क्रियाकलापों द्वारा प्राकृतिक पर्यावरण पर पड़नेवाले बढते कुप्रभावों को अच्छी तरह उजागर किया जा सकता है। प्रागैतिहासिक काल से वर्तमान समयतक मानव-पर्यावरण केमध्य बदलते सम्बन्धों को निम्न चार चरणों में विभाजित किया जाता है।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.301
Volume 3, Issue 1, December 2023

शोध के उद्देश्य -

(1) पर्यावरण संरक्षण करने में आदिवासी जनजाति का योगदान कीस्थितिज्ञात करना।

(2) (पर्यावरण में) आदिवासियों की स्थिति की जानकारी प्राप्त करना ।

(3) जंगल में निवास कर रहे आदिवासियों के जीवन की स्थिति का अध्ययन करना ।

(4) जंगल में आदिवासी समुदायों की आर्थिक व सामाजिक स्थिति का पता लगाना है ।

(5) आदिवासी जनजातियों का पर्यावरण के प्रति रुझाव कितना है, उसकी जानकारी प्राप्त करना है।

शोध प्रविधि–

प्रस्तुत शोध अध्ययन में रखते हुए निम्न पद्धतियों का उपयोग किया गया है

निदर्शन पद्धति –

अध्ययन को स्वरुप देने के लिए उद्देश्य परक निदर्शन के अंतर्गत सीधी शहर का चयन किया गया है। सीधी शहर में रह रहे जनजातियों का चयन निदर्शन के माध्यम से किया गया है।

शोध उपकरण - अध्यन को स्वरुप प्रदान करने के लिए सीधी से प्रश्नावली के माधयम से उनकी राय और विचारों को जानने का प्रयास किये गए है। तथ्य संकलन के लिए प्रश्नावली का उपयोग किया गया है प्रश्नावली के अंतिम प्रश्न के रूप में खुला प्रश्न किया गया जिसके माध्यम से प्रतिभागियों के विचारों को भी शोध में शामिल किया गया है।

अनुसूची - कुछ प्रतिभागियों को प्रश्नावली समझने में समस्या होने के कारण उनसे राय और विचार जाने के लिए प्रश्नावली का उपयोग यहां अनुसूची के रूप में भी किया गया है।

तथ्य विश्लेषण एवं आंकडों का प्रस्तुतिकरण

प्रस्तुत शोध में अध्ययन के माध्यम से यह ज्ञात करने का प्रयास किया गया है। जनजाति कीसामाजिक एवं आर्थिक स्थिति की लोकप्रियता और कार्य पद्धति को केन्द्र में रखकर यह शोध कार्य कियागया है। तथ्यों और आंकड़ों को प्रश्नावली, अनुसूची के माध्यम से एकत्रित कर उनका विश्लेषण किया गयाहै। प्रस्तुत शोध सीधी शहर में रहने वाले जनजाति पर विशेष रूप से केन्द्रितहै। अध्ययन में जिनमे विषयसे संबंधित जानकारी प्राप्त की गई है। तथ्य संकलन हेतु पचास से अधिक प्रश्नावली, अनुसूची को भरवायागया है। लेकिन तथ्य विश्लेषण में पचास प्रतिभागियों के मतो को शामिल किया गया है। तथ्य संकलन काकार्य जुलाई2023 में किया गया है। साक्षात्कार अनुसूची में कुल 03 प्रश्नो को शामिल किया गया है।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.301
Volume 3, Issue 1, December 2023

साक्षात्कार अनुसूची में बहुविकल्पीय प्रश्नों के माध्यम से प्राप्त तथ्यों को अध्ययन हेतु केन्द्र में रखा गया है।साक्षात्कार अनुसूची में विकल्प के रूप मे हाँ, नही और पता नही को तथ्य संकलन हेतु आधार बनायागया है। जो इस प्रकार है।

तालिका क्र. 01

1. क्या आदिवासी जनजाति पर्यावरण के प्रति जागरूक है?

क्र.	न्यादर्श का चयन	प्रतिशत	प्रतिशत
1.	हाँ	20	40%
2.	नही	25	50%
3.	पता नही	5	10%
	योग	**50**	**100%**

10%

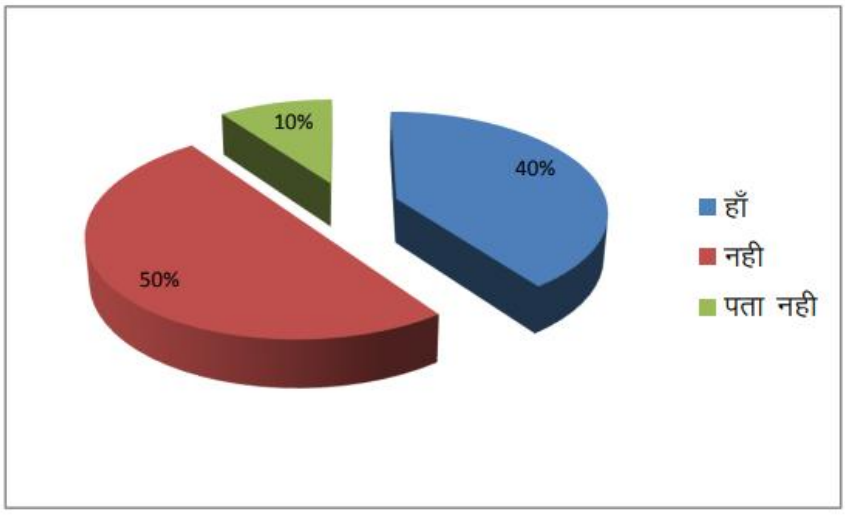

विश्लेषण-

तालिका क्रमांक 1 के आँकड़ोंके अध्ययन से ज्ञात होता है कि आदिवासी जनजाति पर्यावरण के प्रतिजागरूक है कुल 50 उत्तरदाताओं के चुनाव मे से 20 उत्तरदाताओं (40 प्रतिशत) ने कहा है कि जागरूकहै जबकि 25 (50 प्रतिशत) उत्तरदाताओं ने कहा जागरूक नही है तथा 05 (10 प्रतिशत) उत्तरदाताओं नेकहा ज्ञात नही है।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.301
Volume 3, Issue 1, December 2023

तालिका क्र.- 02

2. आदिवासी समाज के प्रति समाज का दृष्टिकोण कैसा है?

क्र.	न्यादर्श का चयन	संख्या	प्रतिशत
1.	अच्छा	22	44%
2.	सहयोगात्मक	15	30%
3.	उपेक्षित	13	26%
	योग	**50**	**100%**

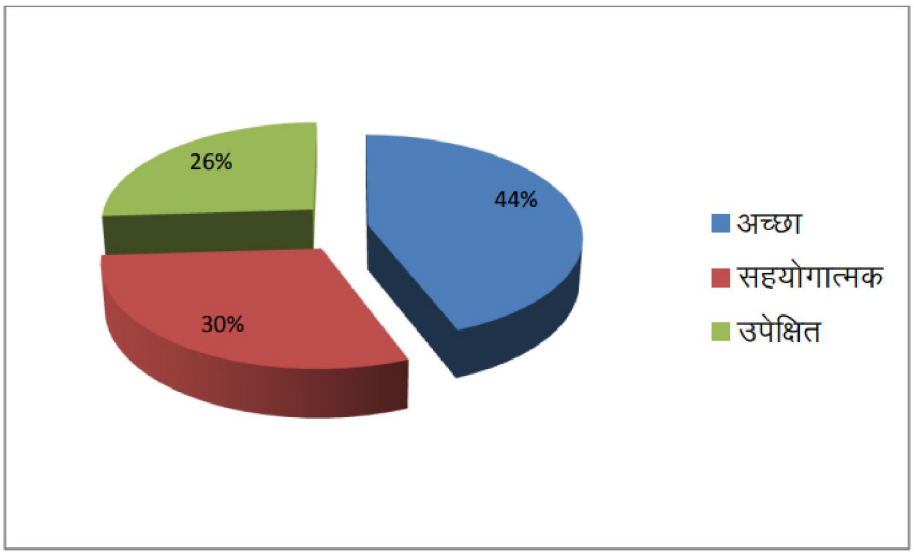

विश्लेषण-

तालिका क्र. 2 के आंकड़ों के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि जनजातिय समुदाय के प्रति समाज कादृष्टिकोण कैसा है कुल50 उत्तरदाताओं में22 (44 प्रतिशत) उत्तरदाताओं ने कहा कि समाज कादृष्टिकोण अच्छा है। जबकि 15 (30 प्रतिशत) उत्तरदाताओं ने कहा कि समाज का दृष्टिकोण अच्छा नहीहै।तथा13 (26 प्रतिशत) उत्तरदाताओं ने कहा कि समाज के दृष्टिकोण केसन्दर्भ में ज्ञात नही है।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.301
Volume 3, Issue 1, December 2023

तालिका क्र.- 03

3. क्या आदिवासी के कार्य करने की दशाओं के संबंध में नवीन जानकारी है?

क्र.	न्यादर्श का चयन	संख्या	प्रतिशत
1.	हाँ	24	48%
2.	नही	22	44%
3.	पता नही	04	08%
	योग	**50**	**100%**

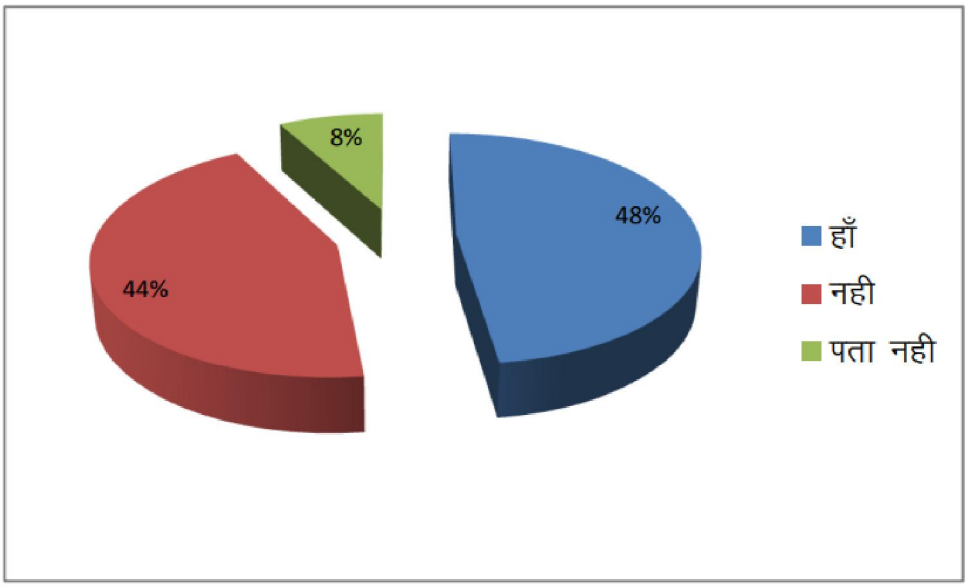

विश्लेषण-

तालिका क्र. 03 के आंकड़ों के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि आदिवासियों के कार्य करने की दशाओं के सम्बन्ध में नवीन जानकारी है कुल 50 उत्तरदाताओं मेंसे 24 (48 प्रतिशत) उत्तदाताओं ने कहा किकार्य करने की दशाओं के सम्बध में नवीन जानकारी है। जबकि 22 (44 प्रतिशत) ने कहा कि कार्य करने के सन्दर्भ में जानकारी नही है। तथा 04 (08 प्रतिशत) उत्तरदाताओं ने कहा कि उन्हे कोई जानकारी नहीहै।

शोध निष्कर्ष :-

आदिवासी जनजाति पर्यावरण के प्रति जागरूक है कुल50 उत्तर दाताओं में से 25 प्रतिशत उत्तरदाताओंने कहा कि जागरूकता में अभी कमी है तथा आदिवासी जनजाति समुदाय के प्रति समाज का दृष्टिकोण कैसा है

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.301
Volume 3, Issue 1, December 2023

केसन्दर्भ में 50 सदस्यों में से 44 उत्तरदाताओं ने कहा कि समाज का दृष्टिकोण अच्छाहै जबकि आदिवासी जनजाति के कार्य करने की दशाओं के संबंध में नवीन जानकारी है केसंदर्भ में कुल50सदस्यों में से 48 प्रतिशत ने कहा कि कार्य करने की दशाओं के संबंध में नवीन जानकारी है।

पर्यावरण संरक्षण को ध्यान में रखते हुये भारत द्वारा वनों के कटाव को रोकने के लिए 2017 एवं 2018 के बीच हेक्टेयर भूमि की वृद्धि दर्ज की है साथ ही भारत ने वर्ष 2023 तक 2.10 करोड़ हेक्टेयर जमीन को उपजाऊ बनाने की लक्ष्य को बढ़ाकर 2 .60 करोड़ हेक्टेयर कर दिया है ताकि वनों के कटाव को रोका जा सके।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. एल्विन बी (1939) द बैगा जॉनमुर्रे लन्दन।
2. बघेल डी. एस. (1990) भारतीय सामाजिक समस्याऐं, पुष्पराज प्रकशन रीवा।
3. तिवारी शिव कुमार (1998) म.प्र. के आदिवासी म.प्र. हिन्दी ग्रन्थ अकादमी।
4. उव्रेती एज.सी. (1970) भारतीय जनजातियां ओरिएंटल प्रकाशन।
5.पटेल जी. पी. (1991) बैगा जनजाति का मानवशास्त्रीय अध्ययन।
6. डेविस किंग्सले (1973) मानव समाज किताब महल इलाहाबाद।
7. ग्रीन ए. डब्ल्यू. सोसियोलॉजी।